19

पूंजीगत एवं आयगत

(व्यय तथा प्राप्तियाँ)

19.1 भूमिका

आप पिछले पाठो में पढ़ चुके हैं कि किसी व्यवसायिक संगठन के लेनदेन एवं घटनाएं किस प्रकार उसके लेखा बहियों में लिखे तथा वर्गीकृत किये जाते हैं। आप परीक्षा सूची के बनाने के विषय में भी पढ़ चुके हैं। एक व्यापारी अपने व्यवसाय के शुद्ध परिणाम एक निश्चित अन्तराल के पश्चात् जानने का इच्छुक होता है। परन्तु न तो परीक्षा सूची तथा न ही उसकी लेखा बहियाँ व्यवसाय के शुद्ध परिणाम दर्शाती हैं। इसके लिए कुछ वित्तीय विवरण बनाये जाते हैं। इन वित्तीय विवरणों को व्यापार एवं लाभ-हानि खाता तथा स्थिति-विवरण का नाम दिया जाता है। परन्तु इससे पहले कि आप इन विवरणों को बनाना जाने, आपको व्यय तथा प्राप्तियाँ यानि पूंजीगत तथा आयगत के विषय मे जानना अति आवश्यक है। यह आपको इन विवरणों में सही प्रकार से विभिन्न मदों को लिखने में सहायता करेगा।

इस पाठ में, हम पूंजीगत तथा आयगत व्यय तथा पूंजीगत तथा आयगत प्राप्तियों के विषय में पढ़ेगें।

19.2 उद्देश्य :

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात्, आप

- व्यय की विभिन्न मदें बता सकेगें;
- उन व्ययों को उदाहरण सहित बता सकेंगे जिनसे सम्पत्ति की प्राप्ति अथवा व्यवसाय की लाभ-उपार्जन शक्ति में वृद्धि होती है;

- पूंजीगत तथा आयगत व्ययों की मुख्य विशेषताओं सम्बन्धी निष्कर्ष निकाल सकेगें;
- व्यय को पूंजीगत तथा आयगत व्यय में वर्गीकृत कर पायेगें;
- पूंजीगत तथा आयगत व्यय में अन्तर कर पायेगें;
- प्राप्तियों को पूंजीगत तथा आयगत प्राप्तियों में वर्गीकृत कर पायेंगे;
- दी गयी सूचना के आधार पर बिके गये माल की लागत की गणना कर पायेगें।

19.3 व्यय की विभिन्न मदें

इससे पहले कि आप व्यय के विभिन्न मदों के विषय में जाने, आपको दो शब्दों 'व्यय' तथा 'समाप्त लागत' के विषय में स्पष्ट होना चाहिये। जैसा आप जानते है कि व्यवसाय में समय-समय कई व्यय करते होते हैं। यदि उसी लेखांकन वर्ष में उपभोग कर लिया जाता है। तो इसे समाप्त लागत (Expense) कहते हैं तथा यदि इसका एक से अधिक वर्षों में उपभोग किया जाता है तो इसे 'व्यय' (expenditure) कहते हैं।

किसी व्यवसाय में हजारों व्यय की मदें होती हैं। इन व्ययों में से कुछ निम्नलिखित हैं :

व्यय :

i) माल के क्रय पर,

ii) स्थाई सम्पत्तियां जैसे भवन, फर्नीचर, मशीन इत्यादि के क्रय पर;

iii) आन्तरिक माल पर,

iv) मजदूरी पर,

v) चुंगी पर,

vi) कच्चे माल के क्रय पर

vii) आयात कर पर

viii) कोयला, गैस, पानी, तेल, ग्रीस, ईंधन, ताप एवं प्रकाश (heating and lighting) पर,

ix) मशीन को स्थापित करने के लिये मजदूरी पर,

x) वेतन,

xi) किराया, रेट्स एवं कर पर

xii) लेखन सामग्री एवं छपाई पर

xiii) डाक खत, टेलीग्राम पर,

xiv) मनोरंजन पर

xv) मरम्मत एवं नवीनीकरण पर,

xvi) स्थाई सम्पत्तियों के अवक्षयण पर,

xvii) कार्यालय व्यय पर,

xviii) बैंक व्यय पर,

xix) साधारण व्यय पर,

xx) यात्रा व्यय पर,

xxi) क्रय की गई पुरानी मशीन के मरम्मत पर,

xxii) मशीन/पुरानी सम्पत्ति के नवीनीकरण पर अधिक व्यय होने पर,

xxiii) सिनेमा हाल के बैठने की क्षमता बढ़ाने पर व्यय पर,

xxiv) अतिरिक्त कमरा बनाने पर,

xxv) स्थाई सम्पत्ति को व्यवसाय के स्थान तक लाने के व्यय पर,

xxvi) व्यवसाय के सुविधा वाले परिसर में आने पर,

xxvii) बाजार में नये उत्पाद को प्रवेश कराने के लिए विज्ञापन व्यय पर,

xxviii) हाथ से चलने वाली मशीन को स्वचालित मशीन में परिवर्तित व्यय पर,

xxix) अनुसंधान एवं विकास पर,

व्यय के प्रकार

व्यय को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :

1. पूंजीगत व्यय,

2. आयगत व्यय, तथा

3. स्थगित आयगत व्यय

1. पूँजीगत व्यय (Capital Expenditure)

वह व्यय जो स्थायी सम्पत्ति की प्राप्ति अथवा व्यवसाय की लाभ-उपार्जन क्षमता में वृद्धि करने के लिए खर्च किया जाता है पूंजीगत व्यय कहलाता है। पूंजीगत व्यय का उपयोग साधारणतय कई लेखांकन वर्षों में किया जाता है। निम्न में पूंजीगत व्यय के कुछ उदाहरण दिये गये हैं। आप इनमें से कुछ को पृष्ठ न.24 तथा 25 पर पा सकते हैं।

i) स्थायी सम्पत्ति जैसे भवन, फर्नीचर, मशीन इत्यादि के क्रय पर किया गया व्यय,

ii) स्थायी सम्पत्ति को लाने का भाड़ा अथवा स्थापना (erection) पर किये गये व्यय जैसे स्थायी सम्पत्ति के सम्बन्ध में दिया गया भाड़ा, मशीन को स्थापित करने के लिए दी गई मज़दूरी इत्यादि। ये व्यय स्थायी सम्पत्ति की लागत में सम्मिलित होते हैं।

iii) वर्तमान स्थाई सम्पत्ति के विस्तार अथवा सुधार के लिये किया गया व्यय। उदाहरण के लिए सिनेमा हाल मे बैठने की क्षमता बढ़ाने के लिए अथवा एक अतिरिक्त कमरा बनवाने में व्यय।

iv) पुरानी सम्पत्ति पर बहुत अधिक मरम्मत पर किया गया व्यय जैसे एक मशीन के नवीनीकरण पर मरम्मत व्यय;

v) एक पुरानी सम्पत्ति को नयी सम्पत्ति मे बदलने का व्यय जैसे हाथ से चलने वाली मशीन को स्वचालित मशीन से बदलवाना।

2. आयगत व्यय : (Revenue Expenditure)

कोई भी व्यय जिसका उपभोग उसी लेखांकन वर्ष में नियमित व्यवसायिक लेनदेनो के लिए किया जाता है आयगत व्यय कहलाता है।

आगत व्यय के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं। इनमें से कुछ को आप 24 तथा 25 पृष्ठों पर दी गई सूचि में भी पा सकते हैं।

i) व्यवसाय के लिए कच्चा माल क्रय करने का व्यय।

ii) व्यवसाय को दिन-प्रति-दिन चलाने में किया गया व्यय जैसे मज़दूरी, वेतन, किराया, रेट्स तथा कर, कार्यालय व्यय, ब्याज़, कटौती इत्यादि।

iii) सम्पत्ति को चालू रखने में किये गये व्यय जैसे मरम्मत, रखरखाव इत्यादि पर किये गये व्यय।

iv) बेचने के लिए खरीदे गये माल पर किये गये व्यय जैसे क्रय, आन्तरिक भाड़ा, आयात कर, चुंगी इत्यादि।

v) स्थायी सम्पत्तियों पर अवक्षयण।

ऊपर दिये गये उदाहरण सम्पूर्ण नहीं है तथा इन्हें सभी जगह माना भी नहीं गया है। क्या कोई व्यय पूंजीगत है अथवा आयगत है यह व्यवसाय के उद्देश्य तथा प्रकृति पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए फर्नीचर पर किया गया पूंजीगत व्यय है परन्तु उस व्यवसाय के लिये जो फर्नीचर में व्यापार करती है आयगत व्यय है। इसी प्रकार संयत्र तथा मशीन पर किया गया व्यय पूंजीगत व्यय है परन्तु उस व्यवसाय के लिए जो इंजीनियरिंग माल में व्यापार करती है, आयगत व्यय है। इसी प्रकार, मज़दूरी अथवा भाड़ा आयगत व्यय है, परन्तु जब मज़दूरी नई मशीन की स्थापना में व्यय किये गये हों अथवा भाड़ा मशीन को व्यवसाय के स्थान पर लाने के लिये दिया गया हो तो ये पूंजीगत व्यय होते है क्योंकि ये स्थायी सम्पत्ति के मूल्य मे वृद्धि करते हैं यानि यहाँ मशीन।

3. स्थगित आयगत व्यय (Deferred Revenue Expenditure)

कुछ ऐसे आयगत व्यय हैं जो एक लेखांकन वर्ष के अन्तर्गत किये जाते हैं परन्तु उनका समूचा अथवा कुछ भाग भविष्य काल के लिये लागू होता है जैसे बाज़ार में किसी नये उत्पाद के प्रवेश कराने अथवा उत्पाद के लिऐ नये बाज़ार की खोज़ पर किया गया भारी विज्ञापन व्यय। ये व्यय आयगत व्यय दिखाई देते हैं। परन्तु ऐसा नही है क्योंकि इनसे मिलने वाला लाभ कई वर्षो में प्राप्त किया जाता है। ऐसे व्यय जिनका लाभ एक वर्ष मे नहीं बल्कि कई वर्षो में प्राप्त किया जाता है स्थगित आयगत व्यय कहलाते हैं।

स्थगित आयगत व्यय के कुछ उदाहरण नीचे विज्ञापन पर दिये गये हैं-

i) बाज़ार में एक नये उत्पाद को प्रवेश दिलाने के लिये किया गया बहुत अधिक प्रारम्भिक व्यय।

ii) व्यवसाय को अधिक सुविधाजनक परिसर में स्थानान्तरित करने मे किया गया व्यय।

iii) अनुसंधान तथा विकास पर किया गया व्यय।

पाठगत प्रश्न 19.1

अ) निम्न व्ययो को सही स्तम्भ में सही का निशान (√) लगाकर पूंजीगत, आयगत तथा स्थगित आयगत व्ययों में वर्गीकृत किजिए :

Expenditure	Capital Expenditure	Revenue Expenditure	Deferred Revenue Expenditure
1. Salaries			
2. Legal Charges			
3. Wages for installing a machinery			
4. Depreciation			
5. Repairs of furniture purchased second hand			
6. Advertisement for introducing a new product			
7. Carriage paid on goods purchased			
8. Research & Development expenditure			
9. Expenditure on dismantling and reinstallation of Plant			
10. Office expenses			
11. Expenditure on the construction of an additional room			
12. Maintenance charges of building			

(ख) रिक्त स्थानों में व्यय का उचित प्रकार भरें :

(i) स्थाई सम्पत्ति पर किया गया व्यय ____________ व्यय है।

(ii) किसी व्यावसायिक इकाई के दिन प्रतिदिन के व्यय ____________ व्यय होते हैं

(iii) पुरानी सम्पत्ति के स्थान पर नई सम्पत्ति लाने पर किया गया व्यय ____________ व्यय है।

(iv) बिक्री के लिये क्रय किये गए माल पर व्यय ____________ व्यय है।

(v) आयगत व्यय जिस का लाभ कई वर्षों तक मिलता रहेगा ____________ व्यय है।

19.4 पूंजीगत एवं आयगत व्यय में अन्तर

आपने पिछले अनुभाग में पूंजीगत तथा आयगत व्यय के विषय मे पढ़ा था तथा अब आप इन दोनों में अन्तर कर पायेगें। पूंजीगत तथा आयगत व्यय में अन्तर के निम्न मुख्य बिन्दु हैं :

अन्तर का आधार	पूंजीगत व्यय	आयगत व्यय
1. उद्देश्य	यह स्थायी सम्पत्ति क्रय करने के लिये किया जाता है।	यह स्थायी सम्पत्ति के रखरखाव के लिए किया जाता है।
2. लाभ-उपार्जन क्षमता	यह व्यवसाय की लाभ-उपार्जन क्षमता बढ़ाता है।	यह व्यवसाय की लाभ-उपार्जन क्षमता नही बढ़ाता है।
3. लाभ का काल	इसका लाभ कई वर्षों तक मिलता रहता है।	इसका लाभ केवल एक लेखांकन वर्ष के लिए है।
4. वित्तीय विवरणों में स्थान	यह स्थिति-विवरण की मद है तथा सम्पत्ति के रूप में दर्शाया जाता है।	यह व्यापार तथा लाभ-हानि खाते की मद है तथा इन दोनों में से किसी एक में डेबिट की ओर दर्शाया जाता है।
5. व्यय की प्रकृति	यह अनावर्तक (Non-current) प्रकृति का होता है।	यह आवर्तक (Recurring) प्रकृति का होता है।

पाठगत प्रश्न 19.2

बताइये कि क्या निम्न कथन सही हैं अथवा गलत :

अ) पूंजीगत व्यय अनावर्तक प्रकृति का होता है।

ब) आयगत व्यय स्थायी सम्पत्ति के खरीदने के लिए किया जाता है।

स) पूंजीगत व्यय व्यवसाय के रखरखाव में सहायता करता है।

द) आयगत व्यय अनावर्तक प्रकृति का होता है।

इ) पूंजीगत व्यय व्यवसाय के लाभ-उपार्जन क्षमता की वृद्धि के लिये किया जाता है।

फ) आयगत व्यय का उद्देश्य व्यवसाय के रखरखाव का होता है।

ज) पूंजीगत व्यय का लाभ कई वर्षों मे फैला होता है।

ह) पूंजीगत व्यय को व्यावसाय के सुचारू रूप से चालने के लिए किया जाता है।

ग) आयगत व्यय व्यापार तथा लाभ-हानि खाते की एक मद है।

घ) आयगत व्यय व्यवसाय की लाभ-अर्जित करने की क्षमता बढ़ाता है

19.5 पूंजीगत एवं आयगत प्राप्तियाँ

जिस प्रकार व्ययों को पूंजीगत अथवा आयगत व्यय मे वर्गीकृत किया जाता है, उसी प्रकार प्राप्तियों को भी वर्गीकृत किया जाता है:

1. पूंजीगत प्राप्तियाँ, तथा

2. आयगत प्राप्तियाँ।

1. पूंजीगत प्राप्तियाँ

वे प्राप्तियाँ जो व्यवसाय के दौरान सामान्य रूप से नहीं होती है पूंजीगत प्राप्तियाँ कहलाती है। पूंजीगत प्राप्तियों के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :

अ) स्थायी सम्पत्तियों की बिक्री से प्राप्तियाँ,

ब) स्वामी द्वारा अतिरिक्त पूंजी लगाना,

स) ऋण लेना

2. आयगत प्राप्तियाँ

वे प्राप्तियाँ जो सामान्य रूप से व्यवसाय के के दौरान होती हैं आयगत प्राप्तियाँ कहलाती हैं। आयगत प्राप्तियों के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं

अ) माल की बिक्री से आय

ब) व्यावसायिक सम्पत्ति के किराये से होने वाली आय

स) अंशो से प्राप्त लाभांश

द) विनियोगों से प्राप्त ब्याज

पाठगत प्रश्न 19.3

बताईये कि क्या निम्न प्राप्तियाँ पूंजीगत प्रकृति की हैं या आयगत प्रकृति की :

i) माल की बिक्री

ii) बैंक से प्राप्त ऋण की राशि

iii) जमा राशियों से प्राप्त ब्याज

iv) प्रतिभूतियों से प्राप्त लाभांश

v) मशीन की बिक्री

vi) किरायेदार से प्राप्त किराया

vii) व्यवसाय के मालिक से प्राप्त अतिरिक्त पूँजी की राशि

viii) जनता से प्राप्त जमा की राशि

ix) अंशो के निर्गमन से प्राप्त राशि

x) फर्नीचर की बिक्री से प्राप्त राशि

19.6 बिके माल की लागत

किसी भी व्यापारिक संस्थान में, उसकी मुख्य क्रिया माल को खरीदना तथा बेचना है। माल के विक्रय मूल्य का निर्धारण करने के लिए, व्यापारी को उस माल की लागत का पता होना चाहिए। बिके माल की लागत माल के क्रय मूल्य तथा वे समस्त व्यय जो माल को व्यावसायिक स्थान तक लाने में खर्च हुए है, के बराबर होती है। उदाहरण के लिए, यदि माल 1,000 रुपये में खरीदा तथा अतिरिक्त व्यय 100 रुपये किये गये (उस माल को बिक्री के स्थान तक लाने में,) तो बिके माल की कुल लागत 1,100 रुपये हुई (यदि समस्त माल को बेच दिया गया है)। यदि वर्ष के आरम्भ में कुछ माल उपलब्ध था तथा कुछ माल वर्ष के अन्त में बिना बिका रह गया था तो बिके माल की लागत की गणना निम्न प्रकार होगी :

बिके माल की लागत = प्रारम्भिक रहतिया
\+
शुद्ध क्रय
\+
क्रय पर किये गये समस्त व्यय
(-)
अन्तिम रहतिया

उदाहरण 1

Sanjay Brothers deal in Readymade Garments. Calculate the cost of goods sold from the information given below:

	Amount (Rs.)
Opening stock of garments	10,000
Closing stock of garments	8,000
Purchases made	1,00,000
Carriage on purchase	2,000
Wages paid to workers to keep the garments in store	4,000
Rent of the shop	1,000
Office Clerk's Salaries	3,000
Office Printing and Stationery	400
Salesman's salaries	4,000

Solution

Cost of Goods Sold = Opening stock + Net Purchases + Expenses incurred on purchases – Closing stock

	Amount (Rs.)
Opening Stock	10,000
+ Purchases	1,00,000
	1,10,000
- Closing Stock	8,000
	1,02,000
+ All expenses incurred to bring the purchase upto store	
Carriage on purchases	2,000
Wages paid to workers to keep the garments in store	4,000
Cost of Goods Sold	1,08,000

उदाहरण 2

Calculate the cost of goods sold from the information given below:

	Amount (Rs.)
Opening stock	20,000
Closing stock	18,000
Purchases	85,000
Carriage on purchases	2,300
Carriage on sales	3,000
Office Rent	5,800
Sales	1,40,000
Wages paid to keep the goods in the godown	3,000
Purchases Returns	5,000

Solution

Cost of Goods Sold =	Opening stock		20,000
	+ Purchases	85,000	
	- Returns	5,000	
	Net Purchases		80,000
			1,00,000
	- Closing stock		18,000
			82,000
	+ All expenses incurred to bring the goods to godown		
	Carriage on Purchase	2,300	
	Wages paid	3,000	5,300
	Cost of Goods Sold		87,300

पाठगत प्रश्न 19.4

निम्न मे कौन-सी समीकरण सही है तथा कौन-सी गलत? सही समीकरणो के सामने 'स' तथा गलत सभी कारणो के सामने 'ग' लिखिये :

बिके माल की लागत बराबर है :

अ) प्रारम्भिक रहतिया+अन्तिम रहतिया-शुद्ध क्रय का मूल्य+व्यवसाय तक क्रय माल को लाने के समस्त व्यय

ब) प्रारम्भिक रहतिया + शुद्ध क्रय का मूल्य – अन्तिम रहतिया + व्यवसाय तक क्रय माल को लाने के समस्त व्यय

स) अन्तिम रहतिया - प्रारम्भिक रहतिया + शुद्ध क्रय का मूल्य + व्यवसाय तक क्रय माल को लाने के लिए किए गए समस्त व्यय

द) अन्तिम रहतिया + प्रारम्भिक रहतिया + शुद्ध क्रय का मूल्य-व्यवसाय तक क्रय माल को लाने के लिए किये गये समस्य व्यय

इ) शुद्ध क्रय का मूल्य + प्रारम्भिक रहतिया - अन्तिम रहतिया + व्यवसाय तक क्रय माल को लाने के लिए किये गये समस्त व्यय।

19.7 आपने क्या सीखा है

1. **व्यय** - नगद भुगतान तथा स्थगित भुगतान को बताता है।
2. **समाप्त लागत** - वह व्यय जिसका लाभ उसी लेखांकन वर्ष मे होता है जिसमे उसे किया गया है।
3. **पूंजीगत व्यय** - स्थायी सम्पत्ति को प्राप्त करने, विस्तार करने अथवा सुधार के लिये किये जाते है।
4. **आयगत व्यय** - समस्त व्यय जो व्यवसाय के लेन-देने में साधारणतया किये गये जाते हैं।
5. **स्थगित आयगत व्यय** - आयगत प्रकृति का बहुत अधिक व्यय, जिसका लाभ बहुत लम्बे समय तक होता रहता है।
6. पूंजीगत व्यय अनावर्तक प्रकृति के होते है। इनका फैलाव लम्बी अवधि तक होता है तथा ये व्यवसाय की लाभ-उपार्जन क्षमता में वृद्धि करते हैं जबकि आयगत व्यय आवर्तक प्रकृति के होते हैं, इनसे लाभ केवल एक ही लेखाकंन वर्ष मे होता है तथा ये सामान्य व्यय होते है।
7. **पूंजीगत प्राप्ति** : वह प्राप्ति जो व्यवसाय के प्रतिदिन संचालन से प्राप्त नही होती है।
8. **आयगत प्राप्ति** : वह प्राप्ति जो व्यवसाय मे प्रतिदिन के संचालन से प्राप्त होती है।
9. बिना बिके माल की लागत - प्रारम्भिक रहतिया + शुद्ध क्रय-अन्तिम रहतिया+व्यवसाय के स्थान तक क्रयों को लाने में किये गये समस्त व्यय सम्मिलित हैं।

19.8 पाठान्त प्रश्न

1. 'व्यय (Expenditure)' 'समाप्त लागत (Expense)' शब्दों का क्या अभिप्राय है? (30-50 शब्दों में)

2. पूंजीगत व्यय क्या है ? उदाहरणों सहित समझाइये। (30-50 शब्दों में)

3. आयगत व्यय क्या है ? उदाहरणों सहित समझाइये। (30-50 शब्दों में)

4. पूंजीगत व्यय तथा आयगत व्यय में अन्तर बताइये। (30-50 शब्दों में)

5. स्थगित आयगत व्यय का क्या अभिप्राय है ? उपयुक्त उदाहरणों सहित समझाइये। (30-50 शब्दों में)

6. पूंजीगत तथा आयगत प्राप्तियाँ क्या हैं ? उदाहरणों सहित समझाइये। (50-70 शब्दों में)

7. निम्न मे कौन से व्यय पूंजीगत, आयगत तथा स्थगित व्यय है ?

अ) कारखाने के मजदूरों को मजदूरी भुगतान की।

ब) मशीन को स्थापित करने के लिए मजदूरी भुगतान की।

स) पुराने खरीदे गये भवन की मरम्मत पर लागत।

द) एक नये उत्पाद के लिए बहुत अधिक प्रारम्भिक विज्ञापन पर व्यय।

इ) एक अतिरिक्त कमरा बनवाने का व्यय।

फ) पुराने टूटे हुए भाग को बदलने में व्यय।

8. Caluclate the cost of goods sold from the information given below:

	Amount (Rs)
Opening Stock	10,000
Closing stock	8,000
Purhcases	80,000
Carriage on purchases	200
Wages to labourers for taking the goods to store	100
Purhcases Returns	1,000
Sales	1,00,000
Carraige on sales	400
Salray to Salesman	1,200

9. Calculate the cost of goods sold from the following information.

	Amount (Rs)
Stock on 1.1.97	15,000
Sales during the year	1,35,000
Sales Returns	10,000
Pruchases during the year	80,000
Carriage inwards	2,000
Purchases Returns	4,000
Wages to workers	5,000
Stock on 31.12.97	18.000

10. The follwoing information is given in respect of M/s Sanjay Brothers as on 31st March, 1997.

	Amount (Rs)
Stock on January 1, 1997	5,000
Purchases made during 3 months	30,000
Purhcases Returns	2,000
Sales made during 3 months	50,000
Amount spent on carriage on purchases	5,000
Stock on 31st March, 1997	10,000

Calculate cost of goods sold from the above information.

19.9 पाठगत प्रश्नों के उत्तर

19.1 अ) पूंजीगत व्यय : 3,,9,11

आयगत व्यय : 1,2,4,7,10,12

थगित आयगत व्यय : 6,8

ब) i) पूंजीगत ii) आयगत iii) पूंजीगत iv) आयगत v) स्थगित आयगत

19.2 सत्य : (अ) (इ) (फ) (ई) (ज)

असत्य : (ब) (द) (ह) (स) (च)

19.3 आयगत : i) iii) iv) vi)

पूंजीगत : ii) (v) (vii) (viii) (ix) (x)

19.4 सही : (ब) (इ)

गलत : (अ) (स) (द)